IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महेंद्र भीष्म कृत 'मैं पायल...' उपन्यास में अभिव्यक्त किन्नर विमर्श का आधुनिक सन्दर्भ

प्रथम लेखक – सुश्री. जुम्केन नीनू
सहायक प्रो., गवर्नमेंट मॉडल डिग्री कॉलेज पॉलिन (हिंदी विभाग)
दूसरे लेखक – प्रो. ओकेन लेगो
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय

सारांश: मेहन्द्र भीष्म ने किन्नर जीवन पर आधारित अपना दूसरा उपन्यास ...मैं पायल'' की रचना वर्ष की। यह एक जीवनीपरक 2016 उपन्यास है जो किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन पर आधारित है। इस उपन्यास में लेखक ने किन्नर गुरु पायल सिंह के जन्म से लेकर किन्नर गुरु पायल बनने तक के जीवनकथा -संघर्षों के द्वारा प्रत्येक किन्नरों की व्यथा-संघर्षों को वर्णन किया है। किन्नर गुरु पायल के जीवन-इसमें समाहित किया गया है। किन्नरों पर केन्द्रित अन्य उपन्यासों की तरह इस उपन्यास में भी वात्सल्य की प्रगाढ़ताविस्थापित जीवन की , समाज की अमानवीय पक्षों का वर्णन किया है। इस उपन्यास में पायल के संघर्ष के दौरान मदद के मानवीय हाथों का ,यौन शोषण ,समस्या भी चित्रण हुआ है। किन्नरों के जीवन संघर्षोंकी सच्ची कथाओं पर आधारित महेन्द्र भीष्म की ...मैं पायल'' उपन्यास किन्नर साहित्य तथा किन्नर विमर्श की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण उपन्यास है।

सूचकांक शर्तें-घटक, स्वरूपण, शैली, स्टाइलिंग, सम्मिलित करें।

I. प्रस्तावना

'किन्नर' और कोई नहीं बल्कि वे लोग हैं जो अपने अपूर्ण जननांगों के कारण समाज में शापित माने जाते है। समाज में इनका महत्त्व गौण समझा जाता है। शारीरिक अपूर्णता के कारण किन्नर बहिष्कृत एवं तिरस्कृत हैं। किन्नरों की सामाजिक अस्तित्व एक बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह है। शारीरिक दोष के कारण वे समाज द्वारा बहिष्कृत एवं अपमानित हैं। यहाँ तक कि वे अपने सारे जन्मसिद्ध अधिकारों एवं सुख-सुविधाओं से भी वंचित हो जाते हैं। समाज का यह वर्ग सर्वाधिक पीड़ित, वंचित एवं प्रताड़ित हैं, जिन्हें समाज ने पूरी तरह से त्याग दिया है और जो हमेशा सताए जाते हैं। किन्नर प्राकृतिक मानवीय गुणों से वंचित हैं जिसके कारण वे न तो विवाह जैसी पवित्र सामाजिक अनुष्ठान का हिस्सा हो सकते हैं और न ही वे सामान्य मनुष्य की भांति बच्चा ही पैदा कर सकते हैं। उनकी इस दयनीय स्थिति के ऊपर यह कठोर एवं हृदयहीन तथाकथित मुख्यधारा का समाज उनसे सहानभूति रखने के बजाय उनपर तरह-तरह के अत्याचार करते हैं और उनका मजाक बनाने से भी बाज नहीं आते है। इस संदर्भ डॉ. एम. फ़िरोज खान द्वारा सम्पादित पुस्तक 'थर्ड जेंडर: कथा आलोचना' में प्रमोद मीणा (अर्द्धनारीश्वरों का नारकीय जीवन) लिखते है कि – "हिजड़ा लोग स्वयं को विशिष्ट लिंग के रूप में देखे जाने की अपेक्षा रखते हैं क्योंकि ये स्त्री-परुष द्वैत पर आधारित परम्परागत लैंगिक व्यवस्था में कही भी अट नहीं पाते हैं...हिजड़े के रूप में पैदा होना व्यक्ति को जीते जी अपने परिवार और समाज से काट देता है। पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों से मिलने वाली भावनात्मक-सामाजिक-आर्थिक निश्चिंताओं के आभाव में एक

हिजड़ा व्यक्ति जिस असुरक्षा, असहायता और निराशा में जीवन बिताता है, जिन पूर्वाग्रहों और दुर्व्यवहारों का सामना उसे रोज करना पड़ता है..मुख्यधारा समाज कभी भी एक हिजड़े व्यक्ति की त्रासदी के प्रति संवेदनशील नहीं हो पाता। समाज के लिए ये हिजड़े हंसी-मजाक का विषय होते हैं...।"[1] समाज का यह वर्ग हर एक मायने में अन्य लोगों से काफी पिछड़ा हुआ है। किन्नरों की दुर्गति का एक बड़ा कारण तथाकथित मुख्यधारा समाज की अंधविश्वास तथा संकीर्ण मानसिकता है। दूसरी तरफ किन्नरों की अशिक्षा, अन्धविश्वास, पाखंड एवं पथभ्रष्ट गुरुओं के कारण भी किन्नरों की स्थिति बद्तर हो जाती है। जैसे 'पोस्ट बाक्स नं. 203 नाला सोपारा' उपन्यास में विनोद ने पथभ्रष्ट गुरुओं की पाखंडता का वर्णन किया है - "सामाजिक तत्वों के हाथ की कठपुतली बनने में जितनी भूमिका किन्नरों के सन्दर्भ में सामाजिक बहिष्कार-तिरस्कार की रही है, उससे कम उनके पथभ्रष्ट निरंकुश सरदारों और गुरुओं की नहीं। ऊपर से विकल्पहीनता की कुंठा ने उन्हें आंधी का तिनका बना दिया। आधुनिक होते लोग पिछड़ी परम्पराएँ और मान्यताओं में विश्वास नहीं रखते। गुंडागर्दी करने वालों के हाथों में वह अपने शिशु को अशिषाने का अधिकार कैसे सौंप सकते हैं? बुजुर्गों की बेसिर-पैर की बातें। एक ओर अशिषाने का सम्मान तो दूसरी ओर उन्हें कलंक मन घर-परिवार से उनका निष्कासन!"[2] 21वीं सदी के इस वैज्ञानिक दौर में भी मुख्यधारा का समाज किन्नरों की स्थिति के लिए भाग्य को दोषी मनाते है, जबकि अन्य कई मसलों पर विज्ञान भाग्यवाद को चुनौती देती है। यह अत्यंत निराशाजनक सच्चाई है कि समाज के तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग भी किन्नर जीवन को पिछले जन्म का पाप अथवा बड़े-बुजुर्गों के बूरे कर्मों का फल मानते है। वे उन्हें हीन दृष्टि से देखते है और मनुष्य की सामान्य कोटि से बाहर रखते है, जिसके कारण किन्नरों को वर्तमान भी अपनी सामाजिक पहचान के लिये संघर्ष करना पड़ रहा है।

किन्नर समुदाय एक ऐसा समूह है जो अपनी विशेष पहचान और जीवन शैली के लिए जाने जाते हैं। ये लोग अपने लिंग को पुरुष या महिला के रूप में नहीं बल्कि 'अन्य' या 'तृतीय लिंग' के रूप में पहचानते है। किन्नर समुदाय का इतिहास बहुत पुराना है। हिंदू धर्म में किन्नरों को तृतीय लिंग के रूप में मान्यता प्राप्त है। प्राचीन भारत में किन्नरों को समाज में एक विशेष स्थान प्राप्त था। रामायण तथा महाभारत जैसे महान पौराणिक ग्रंथों में किन्नरों से सम्बंधित कई प्रसंग हैं। शरद जोशी ने अपनी पुस्तक 'थर्ड जेंडर विमर्श' में लिखते है कि – "भारत के प्राचीन ग्रंथों में समस्त सृष्टि की उत्पत्ति एवं उसके विकास की प्रक्रिया का उल्लेख मिलता है, जिसमें स्त्री-पुरुष उत्पत्ति के साथ-साथ इस तृतीय प्रकृति के मानव अथवा नपुंसकता संतान की उत्पत्ति के विभिन्न मिथक एवं अवधारणाएं मिलती है... रामायाणकाल में किन्नरों की प्रत्यक्ष उपस्थिति के प्रमाण वाल्मीकिकृत रामायण एवं तुलसीदासकृत रामचरितमानस में मिलते हैं...महाभारत में किन्नर के रूप में शिखंडी तथा बृहनल्ला (अर्जुन) का उल्लेख मिलता है...।"[3] मध्यकाल में विशेष रूप से मुग़ल शासनकाल में किन्नरों को विशेष महत्त्व प्राप्त था। उनकी नपुंसकता के चलते किन्नरों को राज-दरबारों में कई छोटे-बड़े पदों पर नियुक्त किये जाते थे। वैष्णव पी. वी. द्वारा सम्पादित 'थर्ड जेंडर विमर्श (उपन्यास तीसरी ताली और फ़िल्म शबनम मौसी के संदर्भ में)' पुस्तक में इसका जिक्र मिलता है – "मुग़ल शासन काल में हिजड़ों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था। उन लोगों को राजनीतिक निर्देशक, शासनकर्ता एवं अधिराक्षक के रूप में रखा करते थे। मुग़ल बादशाहों को ट्रांसजेंडर पर काफी विश्वास था..इस्लाम की धार्मिक-संस्थाओं ने उच्च्व देकर उन्हें सम्मानित किया था।"[4] अंग्रेजों के भारत आगमन के बाद किन्नरों की स्थिति में बड़ा बदलाव देखने को मिलता है। अंग्रेजों ने किन्नरों पर प्रतिबंध लगाने के लिए उनपर जरायमपेशा अधिनियम (1871) लागु किया और उन्हें अपराधी करार देते हुए उनके कृत्यों को गैर जमानत घोषित किया। इस सन्दर्भ में डॉ. पुनीत लिखते है कि- "सन् 1871 में तत्कालीन अँग्रेज सरकार क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट या जरायमपेशा अधिनियम लेकर आई जिसमें इस पर कई प्रतिबंध लगाये गए और सन् 1897 में इसमें संशोधन करते हुए इन्हें अपराधियों की कोटि में रखते हुए इनकी गतिविधियों पर नजर रखने हेतु एक अलग

रजिस्टर तैयार करने को कहा गया। धारा 377 के अंतर्गत इनके कृत्यों को गैर-जमानती अपराध घोषित किया गया।"[5] अंग्रेजों द्वारा किन्नर विरोधी नियमों के लागू किये जाने के बाद किन्नरों की सामाजिक पतन होने लगा। धिरे-धीरे समाज में किन्नरों का स्थान निम्नतम कोटि का हो गया है। उन्हें अक्सर समाज में भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ता है। उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष से करना पड़ रहा था। किन्नर अपनी अस्तित्व की लड़ाई लड़ने लगे। उनकी अस्मिता की खोज और अधिकारों की लड़ाई ने 'किन्नर विमर्श' को जन्म दिया।

'किन्नर' विमर्श एक विचार है जो किन्नर समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उत्थान पर केंद्रित है। इस विमर्श के अंतर्गत किन्नर समुदाय के अधिकारों, उनका सम्मान और सामाजिक न्याय पर वैचारिकी तय की जाती है। किन्नर विमर्श सामाजिक मानदंडों और रूढ़ियों को चुनौती देता है और समावेशिता और विविधता को बढ़ावा देता है। किन्नर विमर्श सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करते हुए किन्नरों के लिए समान अधिकार और अवसर सुनिश्चित करता है।

- किन्नर विमर्श का उद्देश्य:

1. 'किन्नर विमर्श' किन्नर पहचान की समझ और स्वीकृति को बढ़ावा देता है।

2. यह सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को संबोधित करता है।

3. 'किन्नर विमर्श' किन्नरों के लिए कानूनी अधिकारों और सुरक्षा की वकालत करता है।

4. यह किन्नरों की स्वास्थ्य सेवा और कल्याण सेवाओं में सुधार करता है।

5. 'किन्नर विमर्श' किन्नरों की शिक्षा और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देता है।

वैश्विक परिदृश्य में देखे तो 'थर्ड जेंडर' समुदाय ने अपने मानवीय अधिकारों की प्राप्ति के लिए काफी लंबी लड़ाई लड़ी है। एक लम्बे संघर्ष के बाद विश्व के विभिन्न देशों- ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, अर्जेंटीना, अफ्रीका, इंग्लैंड, जर्मनी, इटली, जापान, दक्षिण अफ्रीका, स्पैन, चीन, डेनमार्क, फ्रांस, नीदरलैंड, पाकिस्तान, नेपाल आदि में इस समुदाय को 'तृतीय लिंग' के रूप में पहचान मिली। इन देशों में समाज के सभी वंचित वर्गों को सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर संवेदनात्मक समर्थन मिला।

'तृतीय लिंग' के अधिकारों की लड़ाई में कुछ शुरुआती बिंदु तथा महत्वपूर्ण आंदोलन निम्नलिखित है:

1. 1958 - 'Stonewall Riots' - न्यूयॉर्क यू.एस.ए. में हुए इस दंगे को तीसरे लिंग के अधिकार आंदोलन की शुरुआती बिंदु माना जाता है। इसमें LGBTQ+ समुदाय के लोगों ने पुलिस प्रशासन के खिलाफ अपनी आवाज उठाई और समाज में अपने समान अधिकारों की मांग की।

2. 1959 - लॉस एंजिल्स में 'Cooper Do-Nuts Riots' हुआ, जहाँ LGBTQ+ समुदाय के लोगों ने पुलिस उत्पीड़न के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया।

3. 1966 - सैन फ्रांसिस्को में LGBTQ+ समुदाय ने 'The Compton's Cafeteria Riots' शुरू किया जो 'Cooper Do-Nuts Riots' के समान था जिसने शहर में ट्रांस एक्टिविज्म की शुरुआत को चिन्हित किया।

4. 1990 - अर्जेंटीना में 'Travesti Activism' उभरा जहाँ ट्रैवेस्टी (Cross Dresser, Drag Queen) और ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति हो रहे उत्पीड़न, दुर्व्यवहार और पुलिस हिंसा आदि की निंदा करते हुए उन्होंने अपने अधिकार की मांग की। यह आन्दोलन राष्ट्रीय LGBTQ+ आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया था।
5. 1990 - ट्रांसजेंडर की अधिकारों को लेकर हुए गतिविधियों में वृद्धि हुआ और कई संगठनों जैसे 'Transgender Nation' और 'Transgender Liberation Front' का उदय हुआ।
6. 1992 - लेस्ली फीनबर्ग ने 'Transgender liberation: A Movement whose Time has Come' नामक एक पैम्फलेट प्रकाशित किया, जहाँ ट्रांसजेंडर अधिकार आंदोलन के लक्ष्यों और मांगों को रेखांकित किया गया।
7. 1998 - रीटा हेस्टर (अफ्रीकी-अमेरिकी महिला) की हत्या के बाद उसकी स्मृति में वर्षों से हिंसा और भेदभाव के शिकार हुए ट्रांसजेंडर लोगों के सम्मान में 'Transgender Day of Remembrance' (TDOR) का निर्माण किया गया।
8. 2000: 'National Legal Service Authority' (NALSA) ने ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए स्वास्थ्य सेवा, कानूनी मान्यता और भेदभाव-विरोधी कानून आदि जैसे मुद्दों को लेकर उच्च न्यायलय में याचिका रखी गयी।
9. 2014: भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने ट्रांसजेंडर लोगों को तीसरे लिंग के रूप में मान्यता देते हुए उन्हें समान अधिकार, कानूनी सुरक्षा और कई अन्य सुबिधायें उपलब्ध कार्य गया जो ट्रांसजेंडर अधिकारों के लिए वैश्विक लड़ाई में एक ऐतिहासिक निर्णय था।
10. 2019: 'The Transgender Person (Protection of Rights) Act पारित किया गया, जो ट्रांसजेंडर व्यक्ति को मान्यता देने की अनुमति देते हुए उनके खिलाफ हो रहे भेदभाव को प्रतिबंधित करता है, जिसमें शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ सेवा, संपत्ति पर अधिकार, सार्वजनिक या निजी कार्यालय रखने का अवसर आदि सुबिधायें सुलभ कराया गया।

उपरोक्त बिन्दुओं में कई महत्वपूर्ण घटनाक्रम एवं अधिनियमों की चर्चा हुई हैं जिन्हें 'तीसरे लिंग' के अधिकारों के लिए हुए आंदोलनों की सूचि में महत्वपूर्ण एवं मील के पत्थर माने जा सकते हैं। वर्तमान में 'तृतीय लिंगी' अधिकारों और स्वीकृति को समर्पित गतिविधियाँ विकसित और बढ़ती जा रही है। हर दिन नई चुनौतियाँ और अवसर सामने आ रहे हैं। देर से ही सही भारत में भी इस वैश्विक बदलाव का असर हुआ हैं। आजादी के बाद किन्नर विरोधी नियम हटायें गए। इसके वे 'अपराधी जाति' जैसे कलंकित उपनाम से मुक्त हुए। धीरे-धीरे किन्नर अपनी अस्मिता तथा अधिकारों के प्रति सचेत होने लगे। वे अपने अस्तित्व की खोज करने लगे जिसके परिणामस्वरूप भारत में भी 'किन्नर विमर्श' का जन्म हुआ। भारत में भी किन्नरों के उत्थान से संबंधित अनेक गतिविधियाँ होने लगी। किन्नरों की अस्मिता की लड़ाई में तृतीय लिंग के अन्य वर्ग के साथ मुख्यधारा समाज के कई लोगों ने भी भाग लिया। भारत में किन्नर विमर्श का व्यापक रूप वर्तमान में देखे जा सकते है।

भारत में किन्नर विमर्श की शुरुआत निम्नलिखित बिन्दुओं से माना जा सकता है:

1. आजादी के बाद वर्ष 1951 में किन्नरों को अपराधी अधिनियम की सूचि से हटा दिया गया, जो किन्नरों की अस्तित्व की पहचान और अधिकारों की लड़ाई में पहल और एक बड़ी उपलब्धि थी।
2. 1990 का दशक: लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी द्वारा हिजड़ा कल्याण सभा (HKS) का गठन किया गया, जो भारत में ट्रांसजेंडर अधिकारों की वकालत करने वाले पहले संगठनों में से एक था।

3. 1994 में मुख्य चुनाव आयुक्त टी. इन शेषण ने किन्नरों को मतदान का अधिकार दिया। इससे किन्नरों के लिए राजनीति का द्वार खुल गया था।
4. 1995 में किन्नरों को चुनाव में उम्मीदवारों के रूप में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप शबनम मौसी देश की पहली किन्नर विधायक बनी।
5. 2000: लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी द्वारा ट्रांसजेंडर लोगों को सहायता और संसाधन प्रदान करने के लिए किन्नर समाज उत्थान संस्था (KSUS) की स्थापना की गई।
6. 2000: किन्नरों पर आधारित हिंदी का प्रथम उपन्यास 'यमदीप' का प्रकाशन हुआ।
7. 2003: लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी द्वारा तीसरे लिंग की मान्यता की वकालत करने के लिए तृतीय पंथी आंदोलन की स्थापना की गई।
8. 2004: हिजड़ा कल्याण सभा (HKS) और किन्नर समाज उत्थान संस्था (KSUS) द्वारा आयोजित पहला ट्रांसजेंडर अधिकार सम्मेलन मुंबई में आयोजित किया गया।
9. 2005: भारत सरकार ने विशेष रूप से ट्रांसजेंडर लोगों के लिए एच.आई.वी.एड्स की रोकथाम और उपचार सेवाएँ प्रदान करना शुरू किया।
10. 2009: भारत सरकार ने किन्नरों को स्त्री-पुरुष से भिन्न अलग पहचान को स्वीकृति दिया तथा निर्वाचन सूचि एवं मतदाता पहचान पत्रों में इन्हें 'अन्य' के रूप में दर्ज किया।
11. 2014: सुप्रीम कोर्ट ने किनारों को 'तीसरे लिंग' के रूप में मान्यता दी, जिससे उन्हें कानून के तहत समान अधिकार और सुरक्षा मिली।
12. 2019: Transgender Persons (Protection of Rights) Acts 2019 ने शिक्षा, सेवाओं, रोजगार, स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं, सार्वजनिक परिवहन, आदि क्षेत्र में ट्रांसजेंडर समुदाय के खिलाफ होने वाली भेदभाव पर प्रतिबंध लगता है।

समाज जिस तीव्र गति से आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है, उसी गति से मानवीय मूल्यों का ह्रास भी हो रहा है। वैश्वीकरण और गोर उपभोगतावादी समाज में उपेक्षित किन्नरों को उचित स्थान मिल पाना काफी कठिन है। किन्नरों को पहचान तो मिल गयी है परन्तु समाज में वे उपहास के पात्र बने हुए है। समाज भद्दी गालियों से उन्हें संबोधित करता है। किन्नर समाज में उएक्षित है। साहित्य लेखन में भी किन्नर उपेक्षित ही है। कुछ रचनाओं तथा फिल्मों में किन्नरों को थोड़ी जगह मिली जरुर है परन्तु वहाँ भी उनकी भूमिका मात्र मनोरंजन तक सीमित है अथवा कभी-कभी उनकी उपस्थिति केवल कथा को आगे बढ़ाने के उद्देश्य तक ही सीमित होती है। बाबजूद इसके कुछ ऐसे सजग एवं विवेकी साहित्यकार है जिन्होंने किन्नरों को रचना के केंद्र में रखा तथा अपनी रचनाओं में उन्हें उचित स्थान भी दिया जिसके कारण किन्नर विमर्श की वैचारिकी को फलने-फूलने का अवसर मिला। किन्नर केन्द्रित साहित्यकारों में नीरजा माधव, महेंद्र भीष्म, चित्रा मुद्गल, प्रदीप सौरभ, निर्मला भुराड़िया, आदि नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन रचनाकारों का ध्यान किन्नरों की ओर गया और इन्होनें किन्नरों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। इन रचनाकारों ने किन्नर जीवन तथा समाज की गहरायी से थाह ली और उनकी समस्याओं को अपने विषय के रूप में चुना और उन्हें अपनी रचनाओं का मुख्य पात्र भी बनाया। इन रचनाकारों ने किन्नर जीवन और उनके संघर्षों को आधार बनाकर कई महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचना की, जिनमें 'यमदीप', 'किन्नर कथा', ' तीसरी ताली', मैं भी औरत हूँ', 'गुलाम मंडी', 'मैं पायल...'

आदि प्रमुख हैं। इन उपन्यासकरों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से किन्नरों के प्रति मुख्यधारा की सोच को बदलने तथा किन्नरों को मुख्यधारा समाज से जोड़ने का भरसक प्रयास किया। इन रचनाकरों ने अपनी रचनाओं में सामाजिक धारणाओं तथा पौराणिक कथाओं से भिन्न किन्नरों की एक अलग छवि गढ़ी है जो केवल मनोरंजक तथा नायक के चरित्र को निखारने वाले सहायक पात्र न होकर बल्कि उससे बढ़कर एक सामान्य मनुष्य है साथ ही अपनी जीवन कथा का मुख्य पात्र है। इन उपन्यासों में किन्नरों की शारीरिक संरचना की व्याख्या करने से लेकर मुख्यधारा समाज में किन्नरों का स्थान तथा किन्नरों के प्रति उनके विचार, उनकी सोच एवं प्रतिक्रिया इत्यादि का वर्णन हुआ है। इसके साथ इन उपन्यासों में किन्नर समाज और उनकी परम्पराओं, अंधविश्वासों, उनके सामाजिक अंतर्विरोध आदि पर भी चर्चा की गई है। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज द्वारा उपेक्षित वर्ग की आवाज को जन-जन तक पहुँचाया है और किन्नर विमर्श को आगे बढ़ाने में अपनी अहम् भूमिका निभाया है। 'तीसरी दुनिया' के लोगों का समाज से मात्र इतनी अपेक्षा है कि मानवीय मूल्यों की रक्षा के तहत समाज में इस वर्ग को भी एक उचित स्थान मिले तथा उन्हें भी वह सारे अधिकार प्राप्त हों जो इस संसार में जन्म लेने वाले सभी मनुष्यों को प्राप्त है। किन्नर विमर्श का केंद्रीय उद्देश्य भी यहीं है कि उनके अस्तित्व को स्वीकारा जाये और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित न रखा जाये, उन्हें सम्मान दिया जाये जिनके वे अधिकारी हैं। किन्नर विमर्श किन्नरों की मनुष्य बने रहने की लड़ाई है। यह उनकी अस्मिता का संघर्ष है। उनकी अस्तित्व की लड़ाई है। यहीं कारण है कि वर्त्तमान में अन्य सभी महत्वपूर्ण विमर्शों के साथ-साथ किन्नर विमर्श भी चर्चा-परिचर्चा के केंद्रीय बिंदु के रूप में स्वीकृत है। किन्नर विमर्श के द्वारा किन्नरों को उनके अधिकार, उनका अस्तित्व और उनकी अस्मिता को सुनिश्चित करने की साहित्यिक और वैचारिक पहल हो रही है।

'मैं पायल...' उपन्यास पायल उर्फ़ जुगनी उर्फ़ जुगनू की जीवन गाथा है। इस उपन्यास में पायल अपनी पहचान और अधिकारों के लिए संघर्षरत है। पायल एक किन्नर है जो अपने परिवार और समाज से अलग-थलग महसूस करती है और अपनी पहचान और अधिकारों के लिए संघर्ष करती है। वर्ष 2016 में प्रकाशित महेंद्र भीष्म कृत 'मैं पायल...' उपन्यास किन्नरों पर आधारित एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। 'किन्नर कथा' उपन्यास के बाद महेंद्र भीष्म का यह दूसरा उपन्यास है जो किन्नरों को केंद्र में रखकर लिखा गया है। यह एक जीवनीपरक उपन्यास है जो किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन पर आधारित है। इस उपन्यास में किन्नर गुरु पायल सिंह के जन्म से लेकर उनके किन्नर गुरु बनने तक का पूरा वृतांत प्रस्तुत है। 'मैं पायल...' उपन्यास के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि यह केवल पायल सिंह के संघर्षों की गाथा मात्र नहीं है बल्कि सम्पूर्ण किन्नर समाज के संघर्षों की गाथा हैं। किन्नर जीवन की सबसे बड़ी समस्या विस्थान की है। विस्थापन का दंश काफी पीड़ादायक होता है, फिर चाहे वह परिवार या समाज से मिला हो। किन्नरों को अपने ही घर में दुत्कार मिलता है, उनका बहिष्कार किया जाता है और यही उनके उनके विस्थापन की यात्रा शुरू हो जाती है। इस उपन्यास में किन्नरों के प्रति मुख्यधारा समाज की नजरिया, उनका पारिवारिक बहिष्कार, पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था हाशिये पर खड़ा किन्नर तथा स्त्रियों के संघर्षों का विस्तृत वर्णन हुआ है। इसके साथ ही इस उपन्यास में किन्नर समाज की कई आंतरिक संरचना और समस्याओं का बारीकी से चित्रण हुआ है। पायल सिंह समूचे किन्नर समुदाय का प्रतिनिधित्व करती नजर आती है। उपन्यासकार ने पायल सिंह के जीवन अनुभवों के माध्यम तमाम किन्नरों की संघर्षमयी दास्तान को आवाज दी है। अनूठे पृष्ठभूमि पर आधारित यह कथा किन्नरों से सम्बंधित कई महत्वपूर्ण प्रश्नों को जन्म देती है और पाठकों की सोई संवेदना को झकझोरकर रख देता है।

पायल किन्नर है और वह परिवार तथा समाज द्वारा बहिष्कृत-तिरस्कृत है। किन्नर के रूप में जन्म लेने के कारण पायल को बार-बार अपने पिता के नफरत और आक्रोश का शिकार होना पड़ता है। जब देखो वह पायल को भद्दी-भद्दी गलियां देते है और उसपर हाथ भी उठाते है।

यहाँ तक कि पहली बार पायल को 'हिजड़ा' कहने वाला व्यक्ति भी उसके पिता ही था। हिजड़ों अथवा किन्नरों के प्रति सामाजिक दुर्भावना पायल के पिता के भीतर भी कूट-कूटकर बढ़ी हुई थी। पायल अपने पिता के लिए अभिशप्त संतान थी। अपने पिता द्वारा दुत्कार की कथा को पायल ने इस उपन्यास में कई जगह बताया है – "जब कभी पिताजी दारू के नशे में कोसते, गाली देते, 'ये जुगनी ! हम क्षत्रिय वंश में कलंक पैदा हुई है, साली हिजड़ा है...आदि जाने क्या-क्या वे बकते रहते थे। 'हिजड़ा' यह शब्द सबसे पहले मैंने उन्ही के मुख से सुना था, पर तब मैं इस शब्द के मायने से बिलकुल अनभिज्ञ थी जैसे करमजली, नासपीटी, हरामजादी आदि विशेषण जो भी मेरे लिए प्रयुक्त होते और जिनका भी मैं अर्थ नहीं जानती थी, बस इतना ही समझती थी कि 'हिजड़ा' भी गाली के रूप में प्रयोग में लाया जाने वाला कोई शब्द होगा।"[6] हद तो तब हो गयी जब पायल के पिता उसे स्त्री रूप में देखकर उसे मारने-पीटने से लेकर मार डालने तक की कोशिश करते है। एक बार तो पायल को उसके पिता ने गले में रस्सी डालकर मारने का भी प्रयास किया जिसमें पायल बुरी तरह घायल हुई थी। पायल कहती है कि - "...समय का मुझे ध्यान नहीं रहा था शायद देर रात मुझे अपने शरीर का होश आने पर भान हुआ। मेरे गले में रस्सी बंधी हुई थी, जिसका दूसरा छोर म्यारी (धन्नी) से बंधा था। खपरैल के रास्ते चाँदनी रात का प्रकाश कंडे व् घास से भरे उस कमरे में आ रहा था। मुझे पूरी तरह से होश नहीं आया था पर अंदाजा तो हो ही रहा था कि म्यारी से रस्सी का एक छोर बंधकर मुझे मारने के लिए रस्सी के दुसरे छोर का फंदा मेरी गर्दन में बाँध पिताजी ने मुझे फाँसी दे दी थी...।"[7] पायल की माँ किसी तरह उसे बचा लेती है और अपने पिता की क्रूरता से बचने के लिए घर छोड़कर जाने की सलाह देती है। पायल अपने पिता की क्रूरता और नफरत से बचने तथा अपने परिवार की लाज तथा समाज में इज्जत बनाये रखने के लिए घर छोड़कर भाग जाती है। घर छोड़ने के बाद पायल को कई नयी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। पायल बेघर और भूख की मार को सहती है, वह बेरोजगारी की समस्या से जूझती है। अकेलेपन में पायल यौन-शोषण का भी शिकार होती है। हिजड़ों के गिरोह द्वारा पायल का अपहरण होता है और उसे उनकी टोली का हिस्से बनने के लिए मजबूर किया जाता है। पायल के मना करने पर वे उसे कमरे में बंध करके उसका खाना-पीना बंद करवा देते है। पायल कई बार भागने की कोशिश भी करती है, लेकिन वह हर बार पकड़ ली जाती है और पकड़े जाने पर उसकी खूब पिटाई होती है। अंत में विवश होकर पायल उनकी टोली से जुड़ जाती है और उनके बधाई टोली का हिस्सा भी बन जाती है। यहाँ से पायल की बद्तर जीवन यात्रा गति लेने लगती है। एक बार किन्नर तब्बसुम का गिरियाँ पप्पू पायल के साथ छेड़खानी करता है। पायल के विरोध करने पर वह पायल को भद्दी-भद्दी गालियाँ देकर उसे मारने-पीटने लगते है और उसके कपड़े फाड़कर उसे अधमरे हालत में छोड़ देता है। पायल के किन्नर किन्नर साथी उसकी सहायता नहीं करते है और उसे वहीं मरने के लिए छोड़ देते है। कुछ भले लोगों ने अधमरे हालत में पायल को अस्पताल पहुँचाया जहाँ उसकी इलाज की जाती है। यहाँ से ठीक होकर वह कानपूर लौट जाती है। पायल किन्नर टोली के चंगुल से छूटकर निकल भागती है। किन्नर टोली के लोग पायल की पिटाई से अधिक उसके भाग जाने से दुखी है। इससे पायल को उनकी पाखंडता और स्वार्थ का एक नया रूप देखने को मिलता है। पायल बताती है कि उनकी टोली की गुरु मोना जाते-जाते पायल पर कटाक्ष कर जाती है – "जाते-जाते गुरुमाई के बड़ बोल कानों में पिघले शीशे से उतर गए, 'धीरे-धीरे लाइन पर आ रही थी, तुम नासपितियों ने सब गुड़ गोबर कर दिया था...कित्ता अच्छा नाचती है, रुपये बरसेगें इस पर...अच्छे से देखभाल करो इसकी, दावा-दारु ढंग से हो, असली बुचरा हिजड़े आजकल कहाँ मिलते हैं...शाम को अस्पताल से छुट्टी करा इसे डेरे में ले आओ...लानत जाए तुम करमजलियों पर।"[3] कानपूर आकार पायल अपनी थिएटर की नौकरी में लग जाती है। कुछ समय के बाद एक परिचित की सहायता से पायल ऑर्केस्ट्रा की मंडली से जुड़ जाती है जहाँ उसको शोहरत मिलती है। पायल को स्त्री जैसी जीवन भा गयी थी और बधाई गाने की आमदनी भी दुगनि थी। इसलिए वह ऑर्केस्ट्रा से धन तथा प्रसिद्धि अर्जित करने के बाद वह किन्नरों की टोली से जुड़ जाती है। फिर कुछ समय बाद वह अपनी

अलग किन्नर टोली बनाकर स्वयं गुरु बन जाती है। इस तरह पायल तमाम तरह की मुसीबतों का सामना करती हुई समाज में अपने लिए नाम और शोहरत कमाती है। पायल को अपनी मौजदा स्थिति में पहुँचने के लिए कई तरह की संघर्षों का सामना करना पड़ता है। किन्तु पायल ने कभी हार नहीं मानी और वह अपनी पहचान और अधिकारों के लिए लड़ती रही लेकिन उसे हर कदम पर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पायल भीख मांगने, कचरे के डिब्बे से खाना ढूंढ़ने, रेलवे स्टेशन पर दातुन बेचने, भिखारियों के साथ बांटकर खाने, चाय की थपरी पर बर्तन मांजने तथा थिएटर पर काम करने से लेकर किन्नर टोली के साथ नाचने-गाने, बधाई मांगकर जीविका चलाने तथा ऑर्केस्ट्रा में काम करते हुए अंततः किन्नर गुरु बन जाती है और एक संघर्षमय सफल जीविन व्यथिति करने लगती है।

महेंद्र भीष्म ने 'मैं पायल...' उपन्यास में किन्नर समुदाय के जीवन को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। जुगनू उर्फ़ जुगनी उर्फ़ पायल से किन्नर गुरु पायल सिंह बनने तक की यात्रा में पायल को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। वह अपनी पहचान तथा आत्म-स्वीकृति और अपने अधिकारों के लिए परिवार, मुख्यधारा समाज, किन्नर समाज और अपने आप से लड़ती है। इसमें पायल के जीवन अनुभवों के जरिये समूचे किन्नर समुदाय के अनुभवों को दर्शाया गया है। इस उपन्यास में किन्नर समुदाय के संघर्षों, उनकी भावनाओं और उनके अधिकारों की लड़ाई को बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है। इसमें किन्नर समाज की वास्तविकता को बहुत ही संवेदनशील तरीके से दर्शाया है। उनके संघर्ष, उनकी पीड़ा और उनकी आशाएं-अकंशाओ को इस उपन्यास में देखा जा सकता है। इसमें किन्नर समाज की कई जटिल पहलुओं से पाठकों का साक्षात्कार होता है। यहाँ किन्नरों की पीड़ादायक परिस्थिति और संघर्षों को ही व्यक्त नहीं किया है बल्कि किन्नर समाज में व्याप्त अंधविश्वास, उनके अंतर्विरोध, आपसी रंजिश, अशिक्षा, रूढ़िया तथा सामाजिक व्यवस्था का बारीक़ चित्रण हुआ है। यह उपन्यास किन्नर समुदाय के प्रति समाज की सोच को बदलने में मदद करता है। 'मैं पायल...' उपन्यास सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह उपन्यास समाज को किन्नर समुदाय के प्रति सामाजिक सहानुभूति और अपनेपन के हाथ को बढ़ाने की पहल है। यह उपन्यास न केवल किसी काल्पनिक किन्नर की संघर्ष गाथा है बल्कि किन्नरों की वास्तविक पीड़ा की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। सामान्यतः किन्नरों के प्रति लोगों की राय नकारात्मक होती है। समाज किन्नरों के मूल्यांकन के दौरान उन्हें मनुष्य की श्रेणी से बाहर रखकर बहुत ही पक्षपाती निष्कर्ष तक पहुँचता है। किन्नरों पर केन्द्रित रचनाओं में सामाजिक पूर्वाग्रहों से मुक्त होने की आवश्यकता ही केंद्रीय उद्देश्य प्रतीत होता है। ऐसे लेखनों में कई तो आपबीती विवरण हैं और कई किन्नर-न्याय के प्रयासों की रचना हैं। 'मैं पायल...' उपन्यास किन्नर विमर्श पर एक महत्वपूर्ण काम है। यह उपन्यास किन्नर समुदाय के अधिकारों की लड़ाई का एक आयाम है जिसमें लेखक ने एक नए दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास न केवल हमें किन्नर समुदाय के बारे में जानने में मदद करता है, बल्कि यह हमें समाज में परिवर्तन लाने के लिए भी प्रेरित करता है। किन्नरों का सामाजिक उत्थान बुद्धिजीवियों का संकल्प होना चाहिए। महेंद्र भीष्म ने 'मैं पायल...' उपन्यास की रचना करती अपनी बोधिक जिम्मेदारी का निर्वहन किया है। पायल सामाजिक बहिष्कार-तिरस्कार का सामना करती हुई अपनी परंपरागत दायरे को चुनौती देती हुई अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बिना हारे लगातर परिश्रम करती है। उसने जीवन में कई तरह की कठिनाइयों का सामना किया है। पायल ने लोगों की कटाक्ष को ध्यान दिए बिना स्वयं को बेहतर बनाने का प्रयास किया है। अंततः उसने स्वयं को साबित किया और अपने सपने को साकार किया है। उम्मीद है वह दिन जल्द आयेगा जब समूचे किन्नर समुदाय को मुख्यधारा समाज में पूरी तरह से स्वीकार्यता मिलेगी और बिना किसी सामाजिक बंधनों के सामान्य लोगों के साथ वे भी कदम से कदम मिलाकर चलेंगे। किन्नर विमर्श का मुख्य उद्देश्य भी यही है कि किन्नरों को बिना किसी सामाजिक-धार्मिक चश्में के उन्हें सामान्य मनुष्य की दृष्टि से देखा जाये और उन्हें चुनने की आजादी मिले।

सन्दर्भ सूचि:

1. थर्ड जेंडर: कथा आलोचना, पृष्ठ 17
2. पोस्ट बाक्स नं. 203 नाला सोपारा, पृष्ठ 86
3. थर्ड जेंडर विमर्श, पृष्ठ 106
4. थर्ड जेंडर विमर्श (उपन्यास तीसरी ताली और फ़िल्म शबनम मौसी के संदर्भ में), पृष्ठ 25
5. भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंगी विमर्श, पृष्ठ 70
6. मैं पायल... पृष्ठ 26
7. मैं पायल... पृष्ठ 38
8. मैं पायल...पृष्ठ 106

सहायक सूचि:

1. महेंद्र भीष्म 'मैं पायल...', अमन प्रकाशन, कानपुर, रामबाग, द्वितीय संस्करण, 2016
2. महेंद्र भीष्म, 'किन्नर कथा', सामयिक बुक्स प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2014
3. चित्रा मुदगल 'पोस्ट बाक्स नं. 203 नाला सोपरा', सामयिक प्रकाशन, दरियगंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2016
4. डॉ. रामचंद्र तिवारी 'हिन्दी का गद्य साहित्य', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, नवम् संस्करण, 2014
5. डॉ. नगेन्द्र, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, बयालीसवां संस्करण, 2012
6. डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह 'हिन्दी उपन्यासों के आईने में थर्ड जेंडर', अमन प्रकाशन, कानपुर,प्रथम संस्करण, 2017
7. डॉ. शगुफ्ता नियाज 'थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ', विकास प्रकाशन, बर्रा, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2018
8. डॉ. मीना जाधव, 'चित्रा मुदगल: व्यक्तित्व एवं कृतित्व', अन्नपूर्णा प्रकाशन, साकेत नगर, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2015
9. वैष्णव पी वि, 'थर्ड जेंडर विमर्श', अनुसंधान पब्लिशर्सएण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, चमनगंज, थाना रोड, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2018
10. डॉ. एम. फिरोज खान, डॉ. शिप्रा किरण, 'सिनेमा की निगाह में थर्ड जेंडर' विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2018
11. डॉ. एम. फिरोज खान, 'थर्ड जेंडर: कथा आलोचना', अनुसंधान पब्लिशर्सएण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, चमनगंज, थाना रोड, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2017
12. मिलन बिश्नोई, 'मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी' में किन्नर विमर्श', विद्या प्रकाशन, गुजैनी, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2018
13. डॉ.शगुफ्ता नियाज, 'थर्ड जेंडर: तीसरी ताली का सच', विकास प्रकाशन, बर्रा, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2018
14. डॉ. एम. फोरोज़ खान, 'थर्ड जेंडर पर केंद्रित हिन्दी का प्रथम उपन्यास यमदीप', विकास प्रकाशन, बर्रा, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2018
15. लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, 'मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी!', वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2015
16. डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह, रवि कुमार गोंड, 'भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंगी विमर्श' अमन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2016

17. अकरम हुसैन, मीना कुमार गुप्ता, ‘थर्ड जेंडर कथा की हकीकत’, अनुसन्धान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स, चमनगंज, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2018
18. देवदत्त पट्टनायक, ‘शखण्डी और कुछ किन्नर कहानियाँ’, राजपाल एण्डसन्ज़ प्रकाशन, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2015
19. भगवंत अनमोल ‘जिन्दगी 50-50’, राजपाल एण्डसन्ज़ प्रकाशन, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2018
20. प्रदीप सौरभ, ‘तीसरी ताली’, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2018
21. सुभास अखिल, ‘दरमियाना’, अमन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2018